अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय-द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है, चाहे वो किसी भी क्षेत्र का हो। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रांरभिक अनिवार्य प्रक्रिया है क्योंकि यह व्याख्या की जानेवाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता हैं संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बद्ध उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषो, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता है। जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चूका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं तब वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है।

2.2. समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

वर्तमान समस्या से संबंधित शोधकार्य बहुत अधिक नहीं हुए है। कुछ मिलते–जुलते शोध कार्यो का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है –

1) इन्द्रपुरकर (1968) ने चन्द्रपुर के माध्यमिक विद्यालयों की भाषा संबंधी गलतियों का अध्ययन से संबंधित शोध कार्य किया और यह पाया कि –

1) छात्र के द्वारा शब्दों को बोलने में बार–बार गलतियां होती है।

2) मौखिक परीक्षण द्वारा यह भी पाया कि शब्दों के उच्चारण में भी बार–बार त्रुटिया होती है।

3) लिखित परीक्षण से यह पाया कि बच्चे सुनकर सही शब्द नहीं लिख पाते है।

2) अग्निहोत्री (1971) ने छोटे बच्चों में भाषा विकास पर शोध कार्य किया। उन्होंने अध्ययन किया के भाषा विकास पर विशेषकर सामाजिक आर्थिक स्तर, लिंग और जन्मजाति का क्या प्रभाव पड़ता है। उन्होंने इस अध्ययन के द्वारा यह पाया कि सामाजिक आर्थिक स्तर और लिंग के आधार पर उनमें भाषा विकास की दर में कोई अन्तर नहीं होता है।

3) **अग्रवाल (1981)** ने पढ़ने की योग्यता परीक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने पढ़ने की योग्यता, शाब्दिक व अशाब्दिक उपलब्धि के बीच सम्बन्धों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में संज्ञानात्मक कारण असंज्ञानात्मक कारकों से अधिक महत्वपूर्ण है।

4) **मिश्रा (1982)** ने सामाजिक शैक्षिक स्तर के संदर्भ में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा समपन्नता का अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य किया तथा इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि भाषा का संरचनागत विकास सामाजिक शैक्षिक स्तर से प्रभावित नहीं होता है। मानक भाषा के दृष्टिकोन से वर्तनी त्रुटि पर माता–पिता की उच्च शिक्षा का प्रभाव चौथी कक्षा पर सार्थक रूपसे पड़ता है।

5) **देसाई (1986)** ने कक्षा–4 के विद्यार्थियों की भाषा योग्यता का निदान एवं उपचारातम्क शिक्षा पर एक प्रोजेक्ट लिया जिसका आधार पूर्व की कक्षाओं 1, 2, 3 का अधिगम स्तर था। इसमें शोधकर्ता ने कक्षा–3 की भाषा की पुस्तक का विश्लेषण किया और कठिण शब्दों की एक सूची तैयार की। इसके आधार पर एक परीक्षण तैयार किया गया। न्यादर्श के रूप में कक्षा–4 के 162 विद्यार्थियों जो अहमदाबाद में दो नगर निगम की शालाओं एवं दो प्राइवेट शालाओं में पढ़ रहे थे को लिया। यह निष्कर्ष पाया कि –

1) पूर्व की कक्षाओं में जो विद्यार्थियों ने भाषा में सीखा उसमें अनेक दोष जैसे स्पेलिंग, मिसिंग लेटर, खराब लिखाई, दोषपूर्ण उच्चारण गलत, वाक्य आदि थे।

2) अध्यापकों द्वारा नियमित कक्षाए न लेने के कारण यह दोष पैदा हुए थे, साथ ही अभिभावकों का अपने बच्चों में शिक्षा के प्रति रूचि न लेना या विशेष रूप से नगर निगम की शालाओं में।

6) **दवे (1988)** ने राष्ट्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के डिपार्टमेन्ट ऑफ प्री स्कूल एण्ड एलीमेन्ट्री एजुकेशन के अंतर्गत यूनिसेफ के सहयोग से अरूणाचल प्रदेश को छोड़कर सभी राज्यों एवं केन्द्र शासित क्षेत्रों के 2480 स्कूलों में प्रशासनिक स्तर पर छात्रों की उपलब्धि का अध्ययन किया। उन्होंने अध्ययन में पाया कि कक्षा–1 और 2 में भाषाविषय में उपलब्धि का स्तर कक्षा–3 की अपेक्षा अधिक अच्छा है। लेकिन कक्षा 4 में यह स्तर कम तथा यह उपलब्धियां विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित क्षेत्रों में भिन्न है।

7) **बाजपेयी (1990)** ने माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं के हिन्दी उच्चारण दोष का समिक्षात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि छात्र–छात्राओं की मात्रा संबंधी त्रुटियों में सार्थक अंतर है। शब्द की गलतियां, मन से पढ़े गये शब्द, जिन शब्दों को छोड़ दिया के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। भिन्न भिन्न भाषियों के कारण भी स्पष्ट ज्ञान न होने के कारण उनमें उच्चारण में दोष पाया गया।

8) **द्विवेदी (1992)** ने प्राथमिक स्तर पर मौखिक वाचन एवं पठन बोध नामक विषय पर शोध अध्ययन किया तथा इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के क्या, किसे कब, क्यां,कैसे प्रश्न बोध में कक्षा–4 के बीच सार्थक विकास होता है किन्तु कक्षा चौथी व कक्षा पांचवीं के मध्ये विकास नहीं होता है। कौन प्रश्न बोध में सार्थक विकास नहीं पाया गया। गुणात्मक रूप से शब्द वाचन क्षमता का विकास तीसरी कक्षा तक अत्याधिक कम है।

9) **त्रिपाठी (1993)** में प्राथमिक शालाओं के लिए न्यूनतम अधिगम स्तर योजना के अंतर्गत 10 शहरी, 10 ग्रामीण क्षेत्र की शालाओं में 284 शिक्षक जो कक्षा 1 से 5 तक पढ़ा रहे थे को अध्ययन में शामिल किया। इस परियोजना में शिक्षा को अपनाया गया, और निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए।

1) कक्षा–3 के विद्यार्थियों को पढ़ाने का स्तर कक्षा–1 के विद्यार्थी के समान था।

2) छात्र कक्षा–3 तक पहुंच जाते हैं। परन्तु दक्षताओं में 10 प्रतिशत से 30 प्रतिशत तक बिना सिखे नहीं पढ़ सकते।

10) **गुप्ता (1997)** ने शालाओं का बाह्यमूल्यांकन संबंध प्रतिवेदन प्रस्तुत किया यह अध्ययन भाषा की सोचनीय स्थिति को दर्शाता है। छात्रों की उपलब्धि का प्रतिशत भाषा शिक्षण की असलियत प्रकट करता है। इस अध्ययन के परिणाम बतातें हैं कि कुल छात्रों (407) में से 68.6 प्रतिशत छात्रों की उपलब्धि 50 प्रतिशत से कम है। 28.5 प्रतिशत छात्रों में 80 प्रतिशत से कम एंव 51 प्रतिशत से अधिक अंक अंर्जित किये है तथा मात्र 2.94 प्रतिशत छात्रों ने 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक अर्जित किये है।

11) **भट्ट (1998)** ने मंदसौर जिले के संदर्भ में कक्षा 3 व 5 के विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा ज्ञान का निदानात्मक परीक्षण किया यह अध्ययन कक्षा 3 के 241 व कक्षा 5 के 238 छात्र छात्राओं पर आधारित था। अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते है कि छात्र छात्राओं की उपलब्धि स्तर संतोषजनक नहीं है।

12) **श्रीवास्तव एवं अन्य (1999)** ने विकास खण्ड स्त्रोत तथा संकुल स्त्रोत केन्द्र को शैक्षिक पक्षों के द्वारा सुदृढ़ीकरण नामक प्रोजेक्ट में कक्षा पांचे के 100 बच्चों पर हिन्दी भाषा उपलब्धि ज्ञात किया तथा यह पाया कि 60 प्रतिशत बच्चे पढ़ने में, 30 प्रतिशत बच्चे बोलने में, 10 प्रतिशत बच्चे समझने में, 10 प्रतिशत लिखनें में तथा 30 प्रतिशत बच्चे मात्राओं में त्रुटियां करते है।

13) **गुप्ता (1998)** ने कक्षा–2 के विद्यार्थियों कि भाषा और गणित में अधिगम कठिनाईयों की प्रकृति का अध्ययन किया। यह अध्ययन मध्यप्रदेश के सिहोर जिले के 40 बच्चों पर किया गया। परिणाम स्वरूप यह पाया गया कि पढ़ने तथा लिखने में बच्चे बहुत गलतियां करते हैं, मौखिक रूप से पठन प्रक्रिया में बच्चे बहुत कमजोर पाए गए, बहुत से बच्चे गद्यांश के प्रथम वाक्य को भी नहीं पढ़ सके। बच्चे शब्दों तथा वाक्यों की पहचान में भी बहुत सी त्रुटियां करते है, पढ़ने के कौशल की तुलना में सुनने के कौशल बच्चों में अधिक था। बच्चों की कम उपस्थिति, अभिभावकों का कम शिक्षित होना तथा गरीब होना भी अधिगम कठिनाई के प्रमुख कारण है।

14) **कोरडर (1975)** ने अधिगमकर्ता की त्रुटियोंकी अर्थवत पर महत्वपूर्ण चर्चा प्रस्तुत की है। कोरडर का विश्लेषण इस महत्वपूर्ण धारणा पर अवलंबित है कि मातृभाषा अधिगम और द्वितीय भाषा अधिगम में कोई मुलभूत भेद नहीं है। शिशु द्वारा मातृभाषा अधिगम की प्रक्रिया की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा हे कि मातृभाषा अधिगमकर्ता बालक से काई भी यह अपेक्षा नहीं रखता कि वह आरंभिक स्थिती से ही उन्हीं रूपो का उत्पादन करे, जो प्रौढ़ों के अनुसार शुद्ध या अविचलित हों। हम उसके अशुद्ध वाक्यों को इस बात का प्रमाण मानते है कि वह भाषा संप्राप्ति की प्रक्रिया में है और भाषा विकास को किसी बिन्दु पर उसके भाषाज्ञान का विवरण प्रस्तुत करने वाले के लिए महत्वपूर्ण प्रमाण वसतुतः त्रुटियां ही जुटाती है। बालक मातृभाषा अधिगम प्रक्रिया में नियमों को न्यून करता है और इस प्रकार वह सरलता भाषा के अधिगम आरंभ करता है। द्वितीय भाषा अधिगमकर्ता के लिए भी यही बाते लागू होनी चाहिए।

15) **आनन्द (1985)** ने कक्षा 5 के विद्यार्थियों को लेखन में प्रभाव एंव वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का निदान दिल्ली के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में उपचारातम्क अध्ययन नामक विषय पर शोध किया। इस शोध से निष्कर्ष निकला कि, वर्तनी में गलती का कारण मुख्यतः सही तरीके से न बोला जाना। अक्षरों का सही उच्चारण उम्र के बढ़ने से काई सुधार का न होना पाया गया इसका कारण उच्चारण की सही क्षमता की जागृति पढ़ने की कमी के द्वारा होना पाया गया ना कि उम्र का अन्तर से सबसे अधिक भूलने का कारण अक्षरों का अनुचित रूप से व्यवहार में लाना।

16) **कुमारी, नन्दा बी (1992)** ने मद्रास क्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को हिन्दी लेखन में आने वाली त्रुटियों का निदानात्मक अध्ययन नामक विषय का अध्ययन करना।